रजक समाज

राम राज्य से लोकतंत्र तक

धोबी समाज के अतीत, रीति-रिवाजों, जानी-मानी शख्सियतों और वर्तमान दौर में इस समुदाय के समक्ष व्याप्त चुनौतियों के बारे में जानकारी देने वाली एक अत्यंत उपयोगी पुस्तक

-अजय कुमार रजक

विषय सूची

सम्पादकीय *ix*
आभार *xi*
अनुशंसा पत्र *xiii*
प्रस्तावना *xxix*
1. रजक समाज की उत्पत्ति एवं अतीत 1
2. पौराणिक प्रसंगों में रजक जाति 9
   i. सती-साध्वी सोमा रजकी की कहानी 9
   ii. धोबिन के हाथों सिंदूरदान देने की प्रथा 10
   iii. रामायण का धोबी 11
   iv. श्रीकृष्ण के गुरु ठूंठा धोबी 12
3. इतिहास के पन्नो में रजक जाति 15
   i. मालवा की धरोहर है यह मन्दिर 16
   ii. प्राचीन भारत के शासक टका राज परिवार (धोबी) 17
4. 'मैं धोबी हूँ' -शिवपूजन सहाय 23
5. कहावतों और लोकोक्तियों में धोबी 27

iv. भूतपूर्व श्रीलंकाई राष्ट्रपति आर. प्रेमदासा 134

v. श्रीलंका की राजनीति में उभरता चेहरा सजित प्रेमदासा 136

18. धोबी बिरादरी के प्रमुख संगठन 139

(A) अखिल भारतीय धोबी महासंघ 139

(B) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग संगठन (ISO) 147

(C) रजक समाज के उत्थान के लिए प्रयासरत है संत गाडगे मिशन, दिल्ली 152

(D) देवा (DEWA) 162

19. रजक समाज के नेता एवं राजनेता 168

20. रजक समाज की प्रसिद्ध फिल्मी एवं खेल हस्तियां 175

21. रजक बिरादरी की प्रेरक शख्सियतें 183

22. कपड़ों की धुलाई संबंधी कुछ उपयोगी बातें 193

i. धोबी के बहुत काम आता है नील 196

ii. नई तरह की प्रेस का आविष्कार 198

निष्कर्ष 200

लेखक की स्मृति यात्रा 205

संदर्भ 243

(C) रजक समाज के उत्थान के लिए प्रयासरत है संत गाडगे मिशन, दिल्ली

परम पूज्य महान संत गाडगे महाराज के जीवन, दर्शन एवं बहुजन उपयोगी कार्यों से प्रेरणा लेकर उनके मिशन को जन-जन में प्रवाहित करने के लिए, जिससे मानवता फले-फूले, अपना कर्तव्य समझकर हमारे साथियों ने "संत गाडगे मिशन" की स्थापना 3 सितम्बर, 2000 में की थी। इसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. संत गाडगे महाराज के विचारों को जन-जन तक पहुंचाकर समाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास करना एवं सामाजिक एकता के लिए भाईचारे को बढ़ावा देना।

2. समाज मे व्याप्त बुराइयों एवं कुरीतियों के प्रभाव का अध्ययन करके उनके निराकरण का प्रयास करना।

3. पिछड़े क्षेत्रों मे शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना करके अशिक्षित लोगों के मध्य शिक्षा का विकास करना।

4. पुस्तकालय एवं छात्रावासों की स्थापना करना।

5. गरीब वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करना एवं उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान करना।

6. आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए उन्हें भारत सरकार/राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों से अवगत कराकर लाभान्वित करना।

7. आर्थिक उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक केंद्रों का संचालन करना।

8. सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए अन्य कार्यक्रमों का संचालन करना।

उपरोक्त उद्देश्यों के लिए निम्न कार्यों के निष्पादन में मिशन संलग्न रहा है।

1. संत गाडगे महाराज के जीवन, दर्शन एवं कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सर्वप्रथम मिशन का रजिस्ट्रेशन कराया गया तथा एक पुस्तक "संत गाडगे महाराज एवं उनके विचार", प्रथम अध्यक्ष, श्री सी. पी. सिंह, शालीमार बाग द्वारा लिखी गई, जिसकी 2000 प्रतियों का समाज मे विभिन्न समय पर नि:शुल्क वितरण किया गया।

2. इसके उपरांत डॉ. जी. डी. दिवाकर, अध्यक्ष ने एक पुस्तक "बीसवीं सदी के प्रखर बुद्ध - संत गाडगे महाराज" लिखी। इस पुस्तक का विमोचन अंबेडकर भवन, दिल्ली में श्री श्याम रजक, तत्कालीन उद्योग मंत्री, बिहार सरकार के द्वारा किया गया तथा इस पुस्तक के द्वितीय संस्करण का विमोचन पटना, बिहार में अखिल भारतीय धोबी महासभा के अधिवेशन में किया गया। तृतीय संस्करण का विमोचन तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली में श्री भगवती प्रसाद सागर, पूर्व राज्य मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा आयोजित संत गाडगे बाबा साहब अंबेडकर के अनुयायियों के राष्ट्रीय महासम्मेलन में किया गया। हर संस्करण में 2000 प्रतियों को नि:शुल्क समाज में, विभिन्न समारोहों और जगहों पर वितरित किया गया। ऐसा प्रचार-प्रसार संत गाडगे जी के बारे में संभवतः उत्तर भारत की किसी अन्य संस्था द्वारा नहीं किया गया।

3. सन् 2000 से ही मिशन हर साल संत गाडगे महाराज का जन्म समारोह दिल्ली या अन्य जगहों पर बड़ी धूमधाम से मनाता रहा है, जिसमें सांसद, विधायक, समाज सेवी तथा समाज के सभी वर्ग के लोग बढ़-चढ़कर

हिस्सा लेते रहे हैं। सन् 2018 में दिल्ली के माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने दल-बल के साथ संत गाडगे महाराज का जन्म समारोह मनाया तथा 400 वर्ग मीटर वाले संत गाडगे मंदिर परिसर का उद्घाटन भी किया। हर प्रोग्राम में 2000 या अधिक पम्फलेट/हैंडबिलों का निःशुल्क वितरण प्रचार-प्रसार के लिए किया गया। हर समारोह में संगोष्ठियों के माध्यम से लोगों को जागृत करने के अथक प्रयास किए गए। शायद इस संदर्भ में मिशन उत्तर भारत में अग्रणीय है।

4. संत गाडगे महाराज ने मानव ही नहीं, समूचे प्राणी जगत के दुख दूर करने के लिए भगवान बुद्ध की तरह 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया था। संसार में इतना अधिक दुख है तथा इन दुखों के कारणों को जानकर उन्हें अहसास हुआ कि संन्यासी की तरह हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहना अच्छा नहीं, बल्कि स्थिति को बदलना होगा, जिससे मानवता फले-फूले। भगवान बुद्ध की तरह वे फटे, पुराने कपड़े सीलकर (चीवर) पहनते थे। मिट्टी के गाडगा में किसी ने भिक्षा दे दी। उसे ग्रहण कर जीवन यापन करते थे। नर सेवा ही नारायण सेवा को मानने वाले बाबा ने समता स्थापित करने के लिए गरीबों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने 31 स्कूलों, 15 छात्रावासों का निर्माण एक विशेष पद्धति "बाय द पीपल फॉर द पीपल", यानी लोगों के द्वारा लोगों के लिए के माध्यम से कराया था। समता स्थापित करने के लिए उन्होंने 18 धर्मशाला, 4 अंध पंगु आश्रम सदावर्त, 2 गौशालाओं आदि का निर्माण जनसहयोग से कराया, जिसे हम-आप भूल गए हैं। हम तो सिर्फ गाल बजाते हैं। जन सहयोग नाम की चीज आम जनता में आजकल नजर नहीं आती। इसीलिए हर प्रकार से दुखी रहते हैं।

बलि प्रथा का उन्होंने उन्मूलन किया। स्वच्छता अभियान सफलतापूर्वक चलाया, जिससे बीमारियां नहीं होती थी। समाज को जागृत करने के लिए भगवान बुद्ध की तरह प्रवचनों का सहारा लिया और कर्म

की प्रधानता को महत्व दिया। भगवान बुद्ध की तरह किसी को गुरु नहीं बनाया और न ही किसी को उत्तराधिकारी नियुक्त किया, बल्कि निर्मल मन, वचन, काया के आचरणों को प्राथमिकता दी। भगवान बुद्ध की तरह हिंदू धर्म में प्रचलित जाति प्रथा, ऊंच-नीच, छुआछूत, अंधविश्वास आदि का विरोध किया।

उपरोक्त बुद्धत्व की महान कसौटियों एवं भगवान बुद्ध के धम्म पर कसकर देखने पर संत गाडगे प्रखर बुद्ध ही प्रतीत होते हैं। ऐसा सटीक विशलेषण या अवलोकन आपको संत जी के बारे में अन्यत्र नहीं मिलेगा।

5. श्री भगवती प्रसाद सागर, पूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार के तालकटोरा स्टेडियम में संत गाडगे के अनुयायियों के राष्ट्रीय महासम्मेलन में संत गाडगे मिशन ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था। अंबेडकर भवन में आगंतुकों के ठहरने, भोजन इत्यादि की व्यवस्था मिशन ने ही की थी तथा संत गाडगे को भारत रत्न प्रदान करने की मांग भारत सरकार से करने का मुख्य प्रस्ताव संत गाडगे मिशन का ही था।

6. संत गाडगे मिशन को सर्वप्रथम देश के चुने गए धोबी समाज के 4 सांसदों का अभिनंदन समारोह आयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त है।

7. देश की राजधानी दिल्ली में अपने समाज को जागृत करने का सौभाग्य "धोबी घाटों पर रथ यात्रा" के माध्यम से मिशन को प्राप्त है।

8. देश के हिंदी बाहुल्य क्षेत्र में संत गाडगे के महान मिशन को फैलाने का सौभाग्य भी संत गाडगे मिशन को ही प्राप्त है। मुख्य कारण मिशन के पदाधिकारीगण उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान आदि के मूल निवासी हैं तथा इन राज्यों के कार्यक्रमों मे शिरकत करते रहे हैं तथा लोगों को भी मिशन में आमंत्रित करते रहे हैं।

9. संत गाडगे के जीवन, दर्शन और उनके कार्यों को पत्र (अखबार), पत्रिकाओं में सबसे अधिक लेख प्रकाशित करने का गौरव संत

गाडगे मिशन के अध्यक्ष डॉ. जी. डी. दिवाकर को उत्तर भारत में प्राप्त है।

10. मिशन को धोबी समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए लिखे गए लेख, अखबारों, हैंडबिल आदि के माध्यम से सब संगठनों से अधिक श्रेय प्राप्त है, जैसे "धोबी समाज का उत्थान सुधारवादी आंदोलनों से नहीं, इनका विकास वैचारिक क्रांति, व्यवस्था परिवर्तनवादी अंदोलनों से ही होगा", “संत गाडगे के बुद्धवादी एवं समतामूलक अंदोलन की प्रासंगिकता - आज के परिवेश में” आदि।

11. उत्तर भारत के लोगों को संत जी के माध्यम से जागृत करने के लिए मिशन के अध्यक्ष डॉ. जी. डी. दिवाकर ने काफी लेख पत्र-पत्रिकाओं में लिखे, जैसे बहुजन-श्रमण परंपरा के संत, स्वच्छता आंदोलन के जन्मदाता - गाडगे महाराज", “संत गाडगे महाराज का जनोपयोगी जीवन", “संत गाडगे की प्रतिमा स्थापित की गई" इत्यादि। इसी प्रकार से अपने समाज को जागृत करने के लिए लेख लिखे, जैसे "पैतृक धंधा बना धोबियों की दुर्दशा का कारण", “धोबी समाज के नगरसेन बाबा की शोभायात्रा व मानसिकता" आदि।

12. "सार्थक जीवन का एक पहलू" लेख को सार्थक करते हुए पर्यावरण के क्षेत्र में दिल्ली शहर में, जहां प्रदुषण से आम आदमी बेहाल रहता है, मिशन के अध्यक्ष ने 93 पौधे नीम के, 34 सहजन के, 8 पाकड़ के, 13 जामुन के, 10 आंवले के, 10 वेलुआ के, 14 अर्जुन के, 14 आम के, 9 इमली आदि के समेत 234 पेड़-पौधे पिछले 8 वर्षों में लगाए और सुबह-शाम एक घंटा सेवा करने पर इन्हें बड़ा करने में भी सफलता पाई। 63 पौधे तो 10 फीट से बड़े होकर वृक्ष का रूप धारण कर चुके हैं। आज द्वारका में एमसीडी के 2 पार्कों में खडे होकर कोई चारों तरफ देखे तो डॉ. दिवाकर के द्वारा लगाए गए पेड़-पौधे नजर आते हैं। हमारे समाज के लोगों का वास्ता पानी से बहुत रहता है। पानी पेड़-पौधों के

लिए वरदान स्वरूप ही होता है। अतः सभी बंधुओं को धोबी घाटों के चारों तरफ पेड़-पौधे लगाने चाहिए, यह वहां कार्य करने वालों के लिए स्वास्थ्यवर्द्धक होगा तथा पर्यावरण में अग्रणीय भूमिका निभाने बाला समाज विकसित होगा।

13. देश के करीब आधे राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में धोबी समाज को अनुसूचित जाति व शेष प्रदेशों में अन्य पिछडा वर्ग में रखा गया है, जबकि धोबी समाज भारत वर्ष में सामाजिक रूप से अति पिछड़ा है, छुआछूत का शिकार है और आर्थिक रूप से दयनीय हालत में है। इस विसंगति को दूर करने के लिए, संत गाडगे मिशन ने प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि को कई वार धोबी समाज को अनुसूचित वर्ग में शामिल करने के लिए तथ्यों सहित पत्र लिखा, लेकिन सफलता नहीं मिली। इस उपलक्ष में हर आंदोलन मे संत गाडगे मिशन ने बढ़-चढ़कर दिल्ली, लखनऊ इत्यादि जगहों में भाग लिया, लेकिन जटिल प्रक्रिया की वजह से सफलता नहीं मिली। यह समाज का बडा़ दुर्भाग्य रहा है।

14. हमारे समाज के अधिकतर लोग दिल्ली जैसे शहरों में कपड़ों पर प्रैस करने में मशगूल रहते हैं। ये अधिकतर कोयले से गर्म होने वाली प्रैस का प्रयोग करते हैं, जो आधुनिक नहीं है, खर्चीली है, समय खराब करती है, गंदगी फैलाती है तथा पर्यावरण के लिए भी हानिकारक है। अतः मौका मिलने पर इस प्रैस को गैस के द्वारा गर्म करने के लिए, इंडेन ऑयल गैस कंपनी के अधिकारियों और प्रैस करने वाले बंधुओं की मीटिंग कराने में मिशन ने सफलता पाई। वैसे इस आधुनिकीकरण का फायदा उठाने के लिए उक्त प्रयास को एक आंदोलन का रूप देना होगा।

15. संगठन के रूप में संत गाडगे मिशन का एक परम कर्तव्य रहा है कि समाज में राजनीतिक भागेदारी को प्रोत्साहन प्रदान किया जाए। मिशन ने अपने लैटरपैड पर पार्षद, विधायक और अनुसूचित जाति, जनजाति

आयोग के चेयरमैन आदि के उम्मीदवारों के लिए पैरोकार की भूमिका भी समय-समय पर अदा की है तथा कुछ आर्थिक प्रोत्साहन भी प्रदान किया है। शायद यह गौरव प्राप्त करने में भी मिशन अन्य संगठनों से हमेशा आगे रहा है।

16. संत गाडगे के नाम से दिल्ली शहर में सड़क, धर्मशाला, चौराहे, मेट्रो स्टेशन आदि का नामकरण कराने का प्रयास कई बार किया गया, लेकिन सफलता किसी गॉडफादर के न होने की बजह से नहीं मिली।

17. एनजीओ से सहायता प्राप्त करने, जैसे सिलाई, कढ़ाई, कम्प्यूटर ट्रेनिंग आदि के लिए भी प्रयास किया गया, लेकिन अपनी जगह न होने के कारण सफलता नहीं मिली।

18. दिल्ली व देश की कुछ संस्थाओं से संत गाडगे मिशन सौहार्दपूर्वक तालमेल बनाकर रहा है, अतः सहयोग लेते और देते रहे हैं। किसी से किसी प्रकार की कटुता नहीं है।

19. संत गाडगे मिशन को दिल्ली शहर व अन्य जगहों पर सामाजिक रूप से शादी-विवाह, मृत्युभोज, पगड़ी रस्म व अन्य समारोहों पर भी आमंत्रित किया जाता रहा है। यह मिशन के लिए बहुत बड़े आदर की बात है।

20. सोशल मीडिया में संत गाडगे मिशन के पदाधिकारियों ने, खासकर अध्यक्ष महोदय ने विभिन्न मुद्दों पर अपने उच्च कोटि के लेख लिखकर धूम मचा रखी है। बहुत से लोगों के प्रशंसायुक्त लेख पढ़ने को मिलते हैं, अपने लोगों को सही दिशा-निर्देश भी देने का अच्छा काम किया जा रहा है। कभी-कभी हिंदू सवर्ण समाज के संकीर्ण मानसिकता वाले लोगों से खूब सुनने को मिलता है तथा खरी-खोटी सुनाने का भी मौका मिलता है। कभी-कभी फोन पर धमकियां भी मिलती हैं। विभिन्न समारोहों के फोटो आदि डालने से देश व विदेश में मिशन अपनी पैठ बनाने मे अहम भूमिका निभा रहा है और अपने स्वतंत्र मानवीय पक्ष रख रहा है।

21. संत गाडगे मिशन ने अपने समाज का एक बहुत ही सशक्त पक्ष रखा हुआ है, खासकर अंबेडकरवादियों के समकक्ष और एक मानवीय मान्यता भी हासिल की है, विशेष रूप से शांति स्वरूप बौद्ध, बुद्धिस्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया व अन्य जाने-माने संगठनों के समकक्ष। एक बहुत उच्च कोटि के भिक्षु, ज्ञान रत्न महाथेरा, जो महाराष्ट्र के रहने वाले थे, लेकिन जिन्होंने कर्मभूमि उत्तर भारत, खासकर दिल्ली बना रखी थी, उन्हें कई बार संत जी के जन्म समारोहों मे आमंत्रित किया गया था। जब कभी वे बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती समारोहों में या अन्य जगह मिलते थे तो साथ में बैठे लोगों से हमारे बारे में कहते थे-"देखो संत गाडगे का प्रचारक आ रहा है।" उनकी इस टिप्पणी से हमारा दिल बाग-बाग हो जाता था। अब वे संसार में नहीं हैं। दिल में बड़ी कसक होती है ऐसा महान महाथेरा न पाकर।

22. संत गाडगे मिशन के द्वारा संत जी के जीवन, दर्शन आदि के बारे में प्रचार-प्रसार, प्रति वर्ष जन्म समारोह बड़े धूमधाम से मनाने, उनके बारे में किताबें प्रकाशित करने और उनका निःशुल्क वितरण करने आदि का ही प्रतिफल है कि हिंदी भाषी प्रदेशों, जैसे उत्तर प्रदेश आदि में संत गाडगे के जन्म समारोह आज तहसील स्तर पर मनाए जाने लगे हैं तथा अपने समाज व अन्य लोग संत जी के बारे में कुछ जानने लगे हैं। वैसे अभी और सशक्तिकरण की नितांत आवश्यकता है।

23. संत गाडगे मिशन ने संत गाडगे स्कूल, छात्रावास स्थापित करने के लिए डीडीए विकास सदन, दिल्ली में काफी प्रयास किए, लेकिन सफलता नहीं मिली। आम आदमी पार्टी सरकार के विधायक व पार्षद के साथ एक मीटिंग रखी गई। समाज के लोगों ने एकजुटता दिखाई, संत जी की फोटो, संत जी के जीवन, दर्शन, कार्यों के बारे में लिखी गई पुस्तक "बीसवीं सदी के प्रखर बुद्ध - संत गाडगे महाराज" भेंट की गई तथा फूलमाला, शॉल से स्वागत किया गया। उस मीटिंग मे डॉ. मथुरिया व अन्य वक्ता यह समझाने में सफल हुए कि हमारे समाज ने कांग्रेस को

बहुत वोट दिया, पर हमारे समाज के लिए कुछ नहीं किया, अबकी बार हमारे समाज ने आप सरकार को वोट देकर भारी बहुमत से जिताया तथा समाज के संख्या बल का अहसास कराया तो तत्कालीन पार्षद देशराज सिंह राघव ने खुश होकर संत गाडगे मंदिर परिसर, गरीब बच्चों के लिए पुस्तकालय आदि बनाने के लिए 400 वर्ग गज जगह बिंदापुर, पॉकिट-4 में चिह्नित की। तब संत गाडगे मिशन ने चारों तरफ दीवार बना दी तथा बीच में संत गाडगे की प्रतिमा स्थापित कर मंदिर बना दिया। संत गाडगे मंदिर परिसर का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल के कर कमलों द्वारा 23 फरवरी, 2018 को बड़ी धूमधाम से संपन्न हुआ। आजकल उपरोक्त जगह पर गरीब बच्चों के लिए "संत गाडगे पुस्तकालय" तथा प्रशिक्षण केंद्र के निर्माण में मिशन संलग्न है। यह बहुत खुशी की बात है।

24. एक बार सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक डॉ. बिंदेश्वरी पाठक जी ने अपने कार्यालय प्रांगण में संत जी का जन्म समारोह मनाने के लिए कहा तथा शाही भोजन का प्रबंध किया। इस प्रोग्राम की अध्यक्षता श्री नरसिंह बैठा, पूर्व कैबिनेट मंत्री, बिहार सरकार तथा चेयरमैन, सुलभ इटरनेशनल ने की थी। मुख्य वक्ता के रूप में श्री पाठक जी ने कहा था कि ऐसे उच्च कोटि के महापुरुष का नाम आज से पहले मैं भी नहीं जानता था। मैं उनकी जीवनशैली, कार्य पद्धति और उच्च कोटि के विचारों से प्रभावित हूँ तथा उनके सुझाए मार्ग पर चलूंगा। डॉ. पाठक जी संत गाडगे के जन्म समारोहों में भरपूर आर्थिक मदद करते रहे हैं और 2 बार अध्यक्षता भी की।

25. संत गाडगे मिशन के आजीवन संरक्षक के रूप में श्री नरसिंह बैठा जी का अभूतपूर्व सहयोग रहा। वे मिशन के गौरव थे तथा समाज के लाल बहादुर शास्त्री जी थे। संत जी के अधिकतर जन्म समारोहों में विशिष्ट अतिथि के रूप में वे हमेशा शिरकत करते रहे। उनसे मिशन का

मान-सम्मान बढ़ा था। वे हम सभी को बहुत प्यार करते थे और हमेशा उत्साहित करते रहते थे। मिशन उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

26. संत गाडगे महाराज के महापरिनिर्वाण दिवस 20 दिसम्बर को निःशुल्क चिकित्सा शिविर या भोजन दान का आयोजन मिशन की कार्यकारिणी समिति करती रही है।

उपरोक्त कार्यों के निष्पादन में कार्यकारिणी समिति के सभी महानुभावों का अहम रोल रहा है और सब कार्यों को मिल-जुलकर करते रहे हैं। इसीलिए इतने अच्छे उपरोक्त कार्यों को अंजाम दे सके।

कार्यकारिणी समिति :

1. संरक्षक - श्री सी.पी. सिंह,
2. अध्यक्ष - डॉ. जी. डी. दिवाकर
3. महासचिव - डॉ. आर. सी. मथुरिया
4. चेयरमैन - एडवोकेट जगदीश प्रसाद मंडोरा (मनो.)
5. वाइस-चेयरमैन - डॉ. रामगोपाल
6. उपाध्यक्ष - हरीशचंद्र एवं राकेश कुमार गुड्डू
7. सह-सचिव – लाल सिंह खत्री एवं विजय कुमार
8. सांस्कृतिक सचिव - चोखेलाल एवं किशन कुमार
9. प्रचार सचिव - डी. पी. सिंह
10. कोषाध्यक्ष - राजीव कुमार
11. कानूनी सलाहकार - नरेश कुमार करन